इकाई 14 विकलांग विद्यार्थियों की सामाजिक-संवेगात्मक समस्याएँ

संरचना

14.1 प्रस्तावना

14.2 उद्देश्य

14.3 सामाजिक-संवेगात्मक आवश्यकताएँ

14.3.1 सामाजिक-संवेगात्मक आवश्यकताओं का महत्व

14.3.2 सामाजिक-संवेगात्मक समस्याओं का आविर्भाव

14.4 विकलांगता के प्रकार

14.4.1 शारीरिक विकलांगता

14.4.2 श्रवण विकलांगता

14.4.3 चाक्षुष विकलांगता

14.4.4 मानसिक विकलांगता

14.5 विकलांग व्यक्तियों की सामाजिक-संवेगात्मक समस्याएँ

14.5.1 कलंकीकरण और निवर्तन (प्रत्याहार)

14.5.2 संवेगात्मक समस्याएँ

14.5.3 अंतर्वैयक्तिक संबंधों और सामाजिक समायोजन संबंधी समस्याएँ

14.5.4 संप्रेषण समस्याएँ

14.5.5 नकारात्मक स्व-अवधारणा

14.5.6 व्यवहारगत समस्याएँ

14.5.7 रोजगार संबंधी समस्याएँ

14.6 माता-पिता, अभिभावकों और अध्यापकों की भूमिका

14.7 निर्देशन उपबोधक की भूमिका

14.8 सारांश

14.9 अभ्यास कार्य

14.1 प्रस्तावना

इस इकाई में विकलांग विद्यार्थियों की समाज-संवेगात्मक आवश्यकताओं की व्याख्या की गई है और इन आवश्यकताओं के महत्व और इन व्यक्तियों में समाज-संवेगात्मक आवश्यकताओं के आविर्भाव को समझाया गया है। इस इकाई में विकलांगता के प्रकारों तथा माता-पिता/अभिभावकों, अध्यापकों और निर्देशन उपबोधक की इन विद्यार्थियों की सहायता में भूमिका का भी वर्णन किया गया है ताकि ऐसे विद्यार्थी सामाजिक-संवेगात्मक विकास के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याओं का सामना कर सकें।

14.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन कर लेने के पश्चात् आप इस योग्य हो जाएंगे कि :

- विभिन्न प्रकार की विकलांगताओं, जैसे : मानसिक विकलांगता, श्रवण विकलांगता, चाक्षुष विकलांगता और शारीरिक विकलांगता को समझ सकेंगे और उनकी सूची बना सकेंगे;
- विकलांग व्यक्तियों की समाज-संवेगात्मक समस्याओं का शारीरिक, श्रवण, चाक्षुष और मानसिक विकलांगता के संदर्भ में वर्णन कर सकेंगे;
- माता-पिता, अभिभावक और अध्यापक इन विकलांग विद्यार्थियो की समस्याओं को कम करने हेतु क्या किया जा सकता है - इस बात का पता लगा सकेंगे;
- निर्देशन-उपबोधक विकलांग विद्यार्थियों और उनके परिवार की सहायता कैसे कर सकते हैं - इसे जान सकेंगे।

14.3 सामाजिक-संवेगात्मक आवश्यकताएँ

विकलांग व्यक्तियों की आवश्यकताओं को समझने के लिए हमें अपने परिप्रेक्ष्य को थोड़ा बदलने की आवश्यकता है। आपने जो अंतिम तीन क्रियाकलाप अपनाएँ हों, उनका पुनः स्मरण करें और सोचने का प्रयास करें कि किसी विकलांग व्यक्ति ने उनको कैसे पूरा किया होगा।

1.

2.

3.

उदाहरण के लिए, आप कल्पना करें कि आप खरीददारी करके हाल ही में बाजार से लौटे हैं। यह कार्य एक दृष्टिहीन, बहरे या किसी अन्य प्रकार के शारीरिक या मानसिक रूप से विकलांग व्यक्ति द्वारा कैसे पूरा किया जाता?

आपने क्या कल्पना की?

दृष्टि विकलांगता वाले (अंधे) व्यक्ति को रास्ता खोजने में या सड़क पार करने में कठिनाइयाँ आई होगी या वह कहीं ठोकर खाकर लड़खड़ाया होगा। श्रवण विकलांगता वाला व्यक्ति आने वाले वाहनों द्वारा दी गई चेतावनी ध्वनि को यानी भोंपू की आवाज को नहीं सुन पाया होगा।

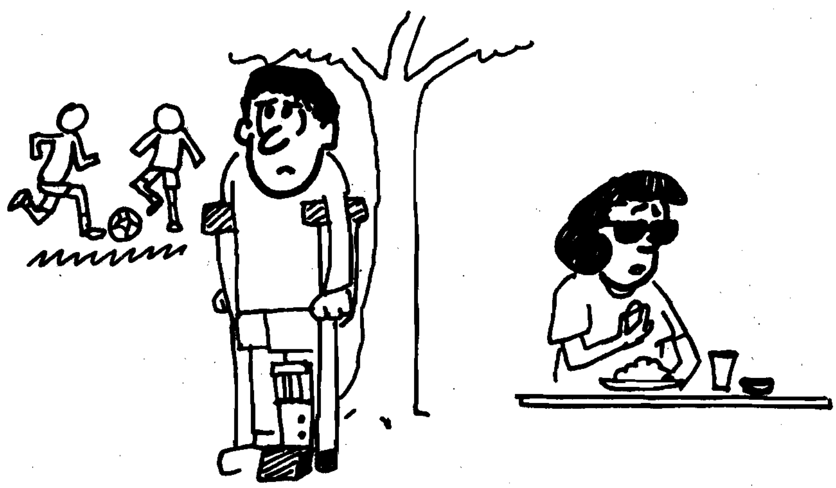

शारीरिक विकलांगता वाले (लंगड़े) व्यक्ति को चलने में सहायता की आवश्यकता हुई होगी तथा दूरी तय करने में अधिक समय लगा होगा। एक मानसिक विकलांग (जैसे पागल) व्यक्ति कुछ करते हुए चकराया होगा या सड़क पर चलते समय दूसरे लोगों ने उसकी हँसी उड़ाई होगी। मान लो, इन सभी व्यक्तियों को बाजार जाना है और वहाँ जाने के लिए किसी सार्वजनिक वाहन यानी बस आदि का उपयोग करना है। ऐसा करते समय हर व्यक्ति को अलग-अलग तरह की कठिनाई होगी। दृष्टिहीन/अंधा व्यक्ति बस नम्बर नहीं पढ़ पाएगा और पागल व्यक्ति गलत बस में चढ़ सकता है। जाना कहीं है और उतर कहीं और जगह जाएगा। आदि-आदि। संक्षेप में, सामान्य व्यक्ति जो काम स्वाभाविक रूप में कर लेते हैं, वही काम विकलांग व्यक्ति के लिए उतना सरल नहीं होता। इससे उसमें कुंठा या हताशा पैदा होती है।

आपकी सोच में विकलांग व्यक्तियों की सामाजिक-संवेगात्मक समस्याओं को बढ़ाने वाले मुख्य कारक कौन-कौन से हैं?

विकलांग व्यक्तियों की बाधा या विकलांगता

एक सामान्य व्यक्ति जैसी दक्षता के साथ कार्य करने की अयोग्यता से उत्पन्न हुई कुंठा के बावजूद किसी भी विकलांग/ बाधाग्रस्त व्यक्ति की दुर्दशा दूसरे कारकों से भी जुड़ी है। इनमें से एक मुख्य बाह्य कारक है : समाज का उसके प्रति दृष्टिकोण।

यह दृष्टिकोण उससे उदासीनता का, उसकी हँसी उड़ाने का, उससे मेल-मिलाप न करने का या उसे अपने बीच न अपनाने का, यानी कुछ भी हो सकता है।

एक बाधाग्रस्त/ विकलांग व्यक्ति के प्रति आपका क्या दृष्टिकोण रहता है? यह जानने के लिए कृपया ईमानदारी से निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें।

1) क्या आपको किसी विकलांग व्यक्ति की उपस्थिति से कभी किसी प्रकार का अटपटापन महसूस होता है?

2) यदि आपको पता लगे कि कुछ विकलांग व्यक्ति आपके पड़ोसी बनने जा रहे हैं, तो क्या आप इससे चिंतित होंगे?

3) क्या आप किसी विकलांग व्यक्ति को अपने यहां रोजगार या नियुक्ति देने से बचेंगे?

4) क्या आपको विकलांग व्यक्तियों द्वारा सार्वजनिक वाहन के प्रयोग में, सार्वजनिक भवनों तक पहुँचने में या टेलीफोन का उपयोग करने में आने वाली समस्याओं की जानकारी है?

5) क्या आप किसी सामाजिक समारोह में उपस्थित किसी विकलांग व्यक्ति से बचने की कोशिश करेंगे?

6) क्या आपने कभी अनुभव किया है कि आप सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा विकलांग व्यक्ति का कम आदर करते हैं?

7) क्या आप किसी विकलांग व्यक्ति पर विशेष ध्यान देंगे?

यदि उपर्युक्त प्रश्नों में से किसी का भी उत्तर 'हाँ' में है, तो फिर इससे विकलांग व्यक्तियों के प्रति आपका नकारात्मक दृष्टिकोण होता है, जो उनके साथ आपके व्यवहार को प्रभावित करेगा। इससे उन विकलांग व्यक्तियों में अतिरिक्त समाज-संवेगात्मक समस्याएँ उत्पन्न होंगी।

हमारे देश में सामान्यतः सभी प्रणालियाँ और सुविधाएँ केवल सामान्य व्यक्तियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनाई गई हैं। हमारे फोन, परिवहन सुविधाएँ, बैंक प्रणाली और यहाँ तक कि लिफ्ट आदि सभी साधन ऐसे बने हुए हैं कि कोई भी विकलांग व्यक्ति स्वतंत्र रूप से यानी किसी दूसरे की सहायता के बिना, उनका उपयोग नहीं कर सकता। जबकि कई विकसित देशों में विकलांग व्यक्तियों की भी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सभी प्रणालियाँ बनाई गई हैं।

उदाहरण के लिए, दृष्टिहीन (अंधे) लोगों की सुविधा के लिए, विकसित देशों में लिफ्ट के बटनों (स्विचों) पर ब्रेल लिपि भी अंकित होता है। सार्वजनिक बसों में नीची की जा सकने वाली सीढ़ियाँ होती हैं ताकि विकलांग व्यक्ति पहिए वाली कुर्सी पर बैठे-बैठे ही बस में प्रवेश पा सके। वहां श्रवण दोष वाले लोगों के लिए विशेष प्रकार के टेलीफोन उपकरण उपलब्ध हैं।

इस प्रकार विकलांग व्यक्तियों की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं बनी प्रणालियों को जब वे काम में लेते हैं तो उन्हें कठिनाइयाँ आती हैं। इससे बाधाग्रस्त व्यक्तियों का दैनिक जीवन और कठिन बन जाता है। वे अपनी विकलांगता या समाज के व्यवहार या दोनों के ही कारण चिंता, भय, अकेलापन और दुर्घटनाओं का सामना करते रहते हैं।

सामान्य व्यक्ति को तो तनाव मुक्ति के लिए मनोरंजन के साधन उपलब्ध हैं या वे दूसरी सामाजिक क्रियाओं में अपने आपको लगा लेते हैं। इन प्रसंगों में भी विकलांग व्यक्ति सुविधा–वंचित में रहते हैं।

उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए बाधाग्रस्त/ विकलांग व्यक्तियों की सामाजिक-संवेगात्मक आवश्यकताओं को समझना बहुत आवश्यक है। उन्हें पहले 'व्यक्ति' के रूप में देखा जाना चाहिए और बाद में बाधाग्रस्त के रूप में।

14.3.1 सामाजिक-संवेगात्मक आवश्यकताओं का महत्व

"मेरे भाई को तीन माह में एक जोड़ी जूता मिलता है, जबकि मुझे एक वर्ष में एक जोड़ी जूता मिलता है।"

"मेरी माँ मेरी बहन को सभी दावतों में ले जाती है, लेकिन मुझे नहीं।" वह कहती हैं, "जब मैं (यानी विकलांग) साथ होता/ होती हूँ तो उसे बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।"

"मेरी माँ मुझे (विकलांग को) दूसरे बच्चों के साथ पार्क में खेलने की इजाजत नहीं देती क्योंकि उसे डर है कि दूसरे बच्चे मेरा मज़ाक उड़ाएँगे या मुझे 'मूर्ख' या 'पागल' कह कर पुकारेंगे।"

"मेरे पिताजी कक्षा में मेरे कमजोर कार्य निष्पादन के लिए मेरी माँ से सदा झगड़ते रहते हैं।'

"इससे मुझे बड़ी निराशा होती है।'

बाधाग्रस्त/ विकलांग व्यक्तियों के उपर्युक्त विचार क्या प्रदर्शित करते हैं?

विकलांग व्यक्ति की भी वे ही शारीरिक, सामाजिक व संवेगात्मक आवश्यकताएँ होती हैं जो अबाधाग्रस्त यानी किसी सामान्य व्यक्ति की होती हैं।

सभी बच्चे कुछ मौलिक आवश्यकताओं के साथ जन्म लेते हैं, जिनकी पूर्ति उनके शारीरिक, सामाजिक व बौद्धिक विकास के लिए जरूरी है। इन क्षेत्रों में से किसी एक की वृद्धि अवश्य ही दूसरे क्षेत्रों से प्रभावित व संबंधित होती है। इस संदर्भ में सामाजिक व संवेगात्मक आवश्यकताओं को समझने की एक विधि मास्लोव (1954) ने प्रतिपादित की। उसने समझा कि व्यक्तिगत आवश्यकताओं से मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य का अनुक्रम बनता है। उसके प्रतिमान के अनुसार उच्च स्तर की आवश्यकताएँ, जैसे सुरक्षा, प्यार और अपनत्व, आत्म सम्मान तथा आत्म-सिद्धि (ये तीनों आवश्यकताएँ) तभी प्राप्त की जा सकती हैं जब अधिक शक्तिशाली शरीर क्रियात्मक (भूख, प्यास, यौन क्रिया आदि) और सुरक्षात्मक प्रकार के दोनों आवश्यकताओं की पूर्ति पहले हो जाए। इसका अभिप्राय यह है कि सर्वोच्च स्तर की आवश्यकता (आत्मसिद्धि) तभी संभव है जब निचली चारों आवश्यकताओं की क्रमशः पूर्ति हो जाए।

जीवित रहने के लिए शारीरिक और स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं की संतुष्टि आवश्यक है, जबकि बालक के पूर्ण विकास के लिए भावात्मक और सामाजिक विकास बहुत महत्वपूर्ण है। बालक का मनोवैज्ञानिक विकास, प्यार किए जाने की भावना से या उसके जीवन में महत्वपूर्ण व्यक्तियों द्वारा स्वीकार किए जाने के साथ-साथ उत्तेजित और चुस्त होने से पोषित होती है।

शारीरिक और संवेगात्मक सुरक्षा आस्था (या विश्वास) के विकास को आधार प्रदान करती है जो बालक को अपने परिवेश से संबंधित सभी पक्षों को खोजने व परखने की इजाजत देती है और स्वयं (self) का भाव यानी आत्म भाव विकसित करने की तरफ़ प्रयत्नशील बनाती है।

यों तो विकलांग व्यक्तियों को उनकी अक्षमताओं के कारण कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है, पर उनकी सामाजिक व संवेगात्मक आवश्यकताओं पर कम ध्यान दिए जाने से उनकी समस्याएँ और भी बढ़ सकती है। इसलिए उनकी समाज-संवेगात्मक समस्याओं को समझना आवश्यक है ताकि वे अपनी क्षमताओं का अधिकतम विकास कर सकें।

14.3.2 सामाजिक-संवेगात्मक समस्याओं का आविर्भाव

किसी भी प्रकार की अक्षमता/विकलांगता एक व्यक्ति की समाज में गतिशीलता को कई प्रकार से सीमित कर देती है।

एक बाधाग्रस्त व्यक्ति की समाज में भूमिका, उसका स्तर और व्यवहार समाज के अन्य व्यक्तियों द्वारा उसके प्रति दिखाए गए अंतर्वैयक्तिक व्यवहार, छवि निर्माण एवं पसंद नापसंद आदि से बहुत अधिक प्रभावित होते हैं। बाधाग्रस्त व्यक्तियों के समाज के प्रति दृष्टिकोण को, दूसरों द्वारा प्रदर्शित व्यवहार में सहानुभूतिपूर्ण अनुक्रियाएँ, नकारात्मक या शत्रुतापूर्ण प्रतिक्रियाएँ, समानताएँ प्रभावित करती हैं। इसका परिणाम उस विकलांग व्यक्ति के सामाजिक जगत से अलगाव, कुसमायोजन और असहभागिता के रूप में निकलता है। विकलांगता केवल चिकित्सा क्षेत्र का विषय ही नहीं, यह सामाजिक महत्व का क्षेत्र भी है। यह किसी व्यक्ति में वास्तविक वस्तु नहीं बल्कि एक सामाजिक मूल्य संबंधि निर्णय है। किसी विकलांग व्यक्ति की समाज और समुदाय के साथ एकता के लिए सामाजिक मूल्य-निर्णय बहुत महत्वपूर्ण होता है। उसके विचलन के प्रति समाज की सोच उसकी रुचियों, आकांक्षाओं आदि को समझने की संभावनाओं को कम करती है। जब विकलांग व्यक्ति का परिवेश पक्षपातपूर्ण, विरोधी एवं उदासीन हो तो ये सारी परिस्थितियाँ मिलकर उस व्यक्ति में प्रायः पलायन या विनिवर्तन जैसे व्यवहार को जन्म देती है।

क्या आपने कभी सोचा है कि एक विकलांग व्यक्ति अपने बारे में क्या सोचता है?

कुछ काम जो साधारण उपलब्ध समय में सामान्यतः पूरे हो जाने चाहिए उन्हें विकलांग व्यक्ति पूरा नहीं कर सकते। वे समाज के व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुत निष्पादन क्षमता स्तरों और व्यवहार करने के तरीकों को नहीं अपना सकते।

सामान्य व्यक्तियों जैसी कार्य करने की योग्यता न हो तो उसका परिणाम क्या होता है?

यह अयोग्यता उनमें परेशानी और 'नीचा देखने' की भावना पैदा कर सकती है और तब वे अपने आपको आत्म-सम्मान रहित व्यक्ति समझने लगते है। आत्म सम्मान के अभाव में व्यक्ति में 'हीनता की ग्रंथि' पड़ जाती है।

यदि विकलांग व्यक्ति के साथ उसके परिवार और उसके नजदीकी संपर्क में आने वाले लोग, खासतौर से प्रारंभिक वर्षों में, आदर की भावना या सम्मान का बर्ताव करें तो इससे उनकी 'स्व छवि' सुधरेगी अर्थात् उनके स्वयं के विचार, चेतना और अर्द्ध चेतना सकारात्मक रूप से प्रभावित होगी।

क्या अपने कभी सोचा है कि जो लड़का बार-बार अत्तीर्ण होता है, वह कैसा अनुभव करता है? वह घोर निराशा का अनुभव करेगा, यानी हताश हो जाएगा। सफल क्रियाकलापों की श्रृंखला किसी भी बालक में उसके मनोबल और आत्मविश्वास को पुष्ट करती है, जबकि असफल प्रयासों के क्रम से उसमें अपनी पहचान खोने या अपुरस्कृत रह जाने का डर समा जाता है। इससे उसका मनोबल गिरता जाता है, जिससे भावी क्रियाकलापों में भी सफलता के अवसर न्यून से न्यूनतर हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, शारीरिक विकलांगता वाला कोई बालक कुछ संवेदी प्रेरक अनुभवों में, जैसे हाथों पर सही नियंत्रण, आँख और हाथ में समन्वय लाने में कुछ हीनता अनुभव कर सकता है, विशेष रूप से तब, जब माता-पिता उसके द्वारा चम्मच का ठीक

से प्रयोग न कर पाने पर या गुटकों द्वारा निर्माण कार्य पूरा न कर पाने पर अधीर हो जाते हैं और उसके प्रयासों की आलोचना करने लगते हैं।

एक बालक की आयु-विशेष में अपेक्षित उसकी निष्पादन-क्षमता का स्तर बहुत-कुछ अभिभावकों की अपेक्षाओं से निर्धारित होता है। थोड़ी बहुत अक्षमता वाले बालक की उसी आयु के सामान्य बालक से तुलना करने पर यदि उसका बहुत पृथक अस्तित्व नहीं है तो फिर उसे सामान्य बालक जैसा ही मानने में कुछ भी अस्वाभाविकता प्रतीत नहीं होती। किंतु जब वह कुछ अनाड़ीपन कर बैठता है तो उसके माता-पिता में से कोई भी व्याकुलता महसूस करने लगता है तब उसे यह आभास हो जाता है कि उस की निष्पादन क्षमता दूसरे बच्चों के समान नहीं है।

तब वह बालक भी अनुभव करने लगता है कि वह माता-पिता की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतर पा रहा है। इससे उसकी स्व-छवि तो खराब होती ही है, साथ-साथ उसके मनोबल व विश्वास में भी गिरावट आ जाती है। जैसी कि ऊपर चर्चा की गई है, एक विकलांग व्यक्ति की समाज संवेगात्मक समस्याएँ इस बात से भी जुड़ी हुई है कि वह अपने बारे में क्या सोचता है।

'सामान्य' व्यक्तियों में विकलांग व्यक्तियों से संबंधित समस्याओं और उनकी निराशाओं पर इस सीमा तक चर्चा करते रहने की प्रवृत्ति होती है मानो बाधाग्रस्त व्यक्ति तो इन्सान ही नहीं है, उसमें व्यक्तिगत योग्यताओं का सर्वथा अभाव है और वह समाज के लिए किसी काम का नहीं है।

व्यक्ति में किसी तरह की अक्षमता हो तो लोग उसका सामान्यीकरण करते हुए मानने लगते हैं कि वह व्यक्ति पूरी तरह से बेकार है। दिमागी दौरे के मरीज़ एक बालक ने कहा : "चूँकि मेरी टांगें डांवाडोल होती हैं, इसलिए लोग सोचते हैं कि मेरा मस्तिष्क भी डाँवाडोल है।" विकलांग व्यक्तियों के बारे में ऐसे सामान्यीकरण लोगों का विकलांग व्यक्तियों के प्रति दोषपूर्ण रवैया ही प्रकट होता है।

इस तरह, बाधाग्रस्त व्यक्तियों के स्वयं अपने बारे में व दूसरों के उनके बारे में विचारों से कई सामाजिक-संवेगात्मक समस्याओं का जन्म होता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1. विकलांग या बाधाग्रस्त व्यक्तियों में सामाजिक-संवेगात्मक समस्याओं को विकसित करने वाले तीन कारकों का उल्लेख करें।

....

....

....

....

2. बालक के संपूर्ण विकास के लिए, कुछ आवश्यकताओं की पूर्ति होना अनिवार्य है। इनमें से किन्हीं दो आवश्यकताओं का उल्लेख करें।

....

....

....

....

3. विकलांग व्यक्तियों के बारे में सामान्य व्यक्ति किस तरह के विचार व्यक्त करते हैं?

....

....

....

4. निम्नलिखित कथन सत्य हैं या असत्य ? बताएँ :

i) विकलांग व्यक्तियों के बारे में समाज का नकारात्मक दृष्टिकोण उन व्यक्तियों की समस्याओं को बढ़ाता है। (सत्य/असत्य)

ii) एक विकलांग व्यक्ति की भी वे ही मूल शारीरिक, सामाजिक और भावात्मक/संवेगात्मक आवश्यकताएँ होती हैं जो एक अबाधाग्रस्त यानी सामान्य व्यक्ति की होती है (सत्य/असत्य)

iii) एक विकलांग व्यक्ति की 'स्वछवि' का निर्धारण करने में पारिवारिक वातावरण का कोई संबंध नहीं होता। (सत्य/असत्य)

iv) विकलांग व्यक्ति में अच्छाइयाँ एवं कमजोरियाँ दोनों ही होती हैं। (सत्य/असत्य)

v) विकलांग बच्चों के अभिभावकों को अपने/विकलांग बच्चों से उच्च अपेक्षाएँ रखना चाहिए। (सत्य/असत्य)

14.4 विकलांगता के प्रकार

14.4.1 शारीरिक विकलांगता

शारीरिक विकलांगता वाले व्यक्ति का वर्णन करने के लिए कई प्रकार के मिलते जुलते समानार्थी शब्दों का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, इन व्यक्तियों को प्रायः शारीरिक रूप से अपंग या पंगु, लूले-लँगड़े, विकृत अंगों वाले और अस्थि विकार वाले रोगी कहा जाता है। इनमें जन्मजात विसंगति से उत्पन्न क्षति, जैसे पांवफिरा (clubfoot), बीमारी से क्षति, जैसे पोलियो, अस्थिक्षय और दूसरे कारणों से क्षति जैसे, प्रमस्तिष्क पक्षाघात, अंग-छेदन (amputations) और अस्थिभंग (fractures) सम्मिलित हैं। पंगुता की सीमा मामूली से गंभीर शारीरिक बाधा हो सकती है। (क) औसत व औसत से ऊपर बुद्धि और (ख) बहुबाधाग्रस्त (multiple handicapped) व्यक्ति जिनमें अतिरिक्त क्षति, जैसे : मानसिक मंदन (mental retardation), अंधापन या बहरापन सम्मिलित है। विद्यालयों में सामान्यतः पाई जाने वाली विकलांगताएँ हैं - प्रमस्तिष्क पक्षाघात (सेरिब्रल पॉल्सी), माइलोमेनिगोसी स्पाइनाफिबिडा और मांसपेशीय दुष्पोषण (डाइस्ट्रोपी)। अधिकतर शारीरिक बाधाग्रस्त बालकों के लिए नियमित व विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। अधिकतर शारीरिक बाधाग्रस्त विद्यार्थियों के लिए नियमित शैक्षिक पाठ्यचर्या ही अधिक उपयुक्त है। हाँ, इसके अतिरिक्त ऐसे विद्यार्थियों के लिए स्वतंत्र जीवनयापन से संबंधित कौशलों जैसे : अपनी देखभाल खुद करना, कपड़े पहनना, भोजन बनाना आदि पर विशेष बल दिया जाता है। शायद इन विद्यार्थियों के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता अनुकूलित किए जा सकने वाले उपकरणों की है। आज तकनीकी विकास इतना अधिक हो चुका है कि न चल सकने वाले या हाथों का प्रयोग न कर सकने वाले विद्यार्थियों के लिए भी उपयुक्त शिक्षण-सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।

दूसरा महत्वपूर्ण अन्यःक्षेप का क्षेत्र शारीरिक बाधाग्रस्त विद्यार्थियों में सामाजिक विकास व आत्म-अवधारणा विकास का है। शारीरिक बाधाग्रस्त व्यक्तियों में क्या लक्षण दिखाई पड़ते हैं, यानी उनकी क्या विशेषताएँ हैं?

प्रायः उनकी विशेषताएँ हैं : निश्चेष्टता या निष्क्रियता, दृढ़ता में कमी, अवधान-अवधि में कमी, अन्वेषण की कमी और अतिरिक्त दिखावा। देखा गया है कि शारीरिक बाधाग्रस्त विद्यार्थी वयस्कों पर अधिक निर्भर रहते हैं और अपने साथियों से कम अंतःक्रिया करते हैं।

इन विद्यार्थियों के लिए अन्तःक्षेप की नीति में सामाजीकरण यानी मिलनसारिता और स्वतंत्रता पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। अभिभावकों और अध्यापकों को ऐसे तरीकों का पता लगाना होगा जिनसे उनमें स्वतंत्रता और स्वाभिमान की भावना बढ़े।

वस्तुतः मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से, शारीरिक बाधाग्रस्त व्यक्तियों और सामान्य व्यक्तियों में कोई सार्थक अंतर दिखाई नहीं पड़ता। अपंग व्यक्ति की वास्तविक अपंगता उसके लिए इतनी बाधक नहीं होती जितनी कि उसके समग्र सामाजिक समायोजन की समस्या बाधक होती है।

14.4.2 श्रवण विकलांगता

श्रवण हीनता यानी बहरापन एक मुख्य विकलांगता है। इसका प्रभाव व्यक्तियों को न केवल उसके चारों ओर के ध्वनि / शब्द संसार से अलग करता है, बल्कि बहरे विद्यार्थियों को भाषा सीखने में आने वाली कठिनाइयों और विकास के दूसरे क्षेत्रों में इसके कुप्रभावों का सामना करना पड़ता है। श्रवण हानि पूर्ण हो सकती है (यद्यपि वास्तव में ऐसा बहुत कम होता है) और आंशिक भी। कोई बिलकुल नही सुनता तो कोई ऊँचा सुनता है। ऐसी अल्प बधिरता भी हो सकती है जिसके लिए किसी श्रवण-यंत्र की आवश्यकता पड़े। हजार में से केवल एक बालक ही पूर्णतः बधिर होता है। और हजार में दो से भी कम व्यक्ति ऐसे होते हैं, जिन्हें श्रवण-यंत्रों के प्रयोग की आवश्यकता पड़ती है। कभी-कभी कान में रोग का संक्रमण और मध्य कर्ण में तरल (द्रव) बनना विद्यालय स्तर पर श्रवण-समस्याओं का मुख्य स्रोत है।

14.4.3 चाक्षुष विकलांगता

यहाँ दृष्टि विकलांगता शब्द व्यापक अर्थो में प्रयुक्त हुआ है। यह पूरे अंधेपन की बजाय दृष्टि हानि को दर्शाता है। इसे हम दृष्टि अक्षमता भी कह सकते हैं। वस्तुतः 'अंधा' और 'दृष्टि बाधित' में प्रकार्यात्मक अंतर है। 'दृष्टि बाधा' या 'दृष्टि अक्षमता' वाले वे लोग भी कहे जाएँगे जो 'अंधे' नहीं हैं पर जिनकी आँखों में रोशनी की कमी है यानी देखने संबंधी कोई न कोई अक्षमता है। जैसे : भैंगापन, दृष्टितीक्षमता, वर्णांधता, द्विनेत्री दृष्टि आदि। ये सभी अक्षमताएँ दृष्टि दोष के अंतर्गत आती हैं, इस संदर्भ में दृष्टि विकलांगता, दृष्टि अयोग्यता या दृष्टि हानि समानार्थक शब्द हैं।

दृष्टि विकलांगता कई कारणों से उत्पन्न हो सकती है जिसका स्वरूप सामान्य भैंगापन से लेकर पूर्ण अंधता (बहुत कम) तक हो सकता है।

14.4.4 मानसिक विकलांगता

हमारी सभी शक्तियों या क्षमताओं में मनःशक्ति या बुद्धि सर्वाधिक मौलिक शक्ति है। इसकी सहायता से हम सभी पर्यावरणीय परिस्थितियों के साथ अनुकूलन करते हैं, और अपनी सीमाओं को लांघ कर अपने व्यक्तिगत संसाधनों का दोहन करते हैं। दृष्टि दोष, श्रवण-विकलांगता, चलने-फिरने की बाधाएँ आदि सभी कमियाँ गंभीर हैं किंतु इन अक्षमताओं को कम करने के लिए बुद्धि का उपयोग किया जा सकता है।

मानसिक विकलांगता वाले बच्चों में बुद्धि की शक्ति या उसके उपयोग की क्षमता प्रभावित होती है। ए. ए. एम. आर. (अमरीकन एसोसिएशन ऑन मैंटल रिटार्डेशन - 1992) की परिभाषा के अनुसार मानसिक मंदन से अभिप्राय है व्यक्ति की कार्य करने की क्षमताओं का पर्याप्त मात्रा में सीमित हो जाना। इसके लक्षण हैं : औसत से बहुत ही निम्न स्तर के बौद्धिक कार्यो का संपन्न होना तथा साथ-साथ निम्नलिखित अनुकूली कौशल क्षेत्रों में से किन्हीं दो कौशलों का भी अपेक्षित रूप में सीमित हो जाना। जैसे : संप्रेषण, अपनी देखभाल, घर का जीवन, सामाजिक कौशल, सामुदायिक उपयोग, स्वनिदेशन (self-direction) स्वास्थ्य और सुरक्षा, क्रियात्मक और शैक्षिक, क्षमता, आराम और कार्य। मानसिक मंदन 18 वर्ष की आयु से पहले दिखाई पड़ जाता है।

इस परिभाषा में तीन महत्वपूर्ण वाक्यांशों का प्रयोग हुआ है :

1) पहला - औसत से बहुत ही निम्न स्तर का बौद्धिक कार्य। इसका अर्थ यह है कि मानसिक रूप से मंदित व्यक्ति वे हैं जिनका बुद्धि-परीक्षण करने पर यह पाया जाता है कि उनका बौद्धिक विकास सामान्य व्यक्ति के विकास की तुलना में कम-से-कम दो कौशल-क्षेत्रों में तो अवश्य ही बहुत अधिक मात्रा में सीमित रह गया है, यानी विकास रुक गया है।

2) दूसरा वाक्यांश है : 'साथ-साथ अनुकूली कौशल क्षेत्रों में, यानी व्यवहार में, कमी रह जाना।' यदि व्यक्ति मानसिक रूप से मंदित है तो यह भी स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि बहुत निम्न स्तर के बौद्धिक कार्यों के साथ-साथ उसके अनुकूलन व्यवहार में भी कमी अवश्य पाई जाती है।

3) तीसरे प्रमुख वाक्यांश का तात्पर्य यह है कि उपर्युक्त दोनों प्रकार के मंदन उस व्यक्ति में 18 वर्ष की आयु से पूर्व ही अवश्य प्रकट हो जाते हैं। मानसिक विकलांगता वाले बच्चे कई चीजों में सामान्य बच्चों के समान होते हैं तो उनके कुछ लक्षण उनसे भिन्न भी होते हैं। ये लक्षण हैं : धीमी प्रतिक्रिया, स्पष्टता का अभाव, तेजी से सीखने में और शीघ्र समझने में कमी, निश्चय न कर पाना, ध्यान केंद्रित करने में कमी, चिड़चिड़ापन विकास में विलंब और कमजोर स्मरण-शक्ति।

मानसिक मंदन और मानसिक बीमारी एक नहीं है दोनों में अंतर है। मानसिक मंदन एक स्थिति है, जिसका उपचार नहीं किया जा सकता, किंतु मानसिक रूप से मंद व्यक्ति को कई बातें सिखाई जा सकती है। मानिसक मंदन का एक महत्वपूर्ण लक्षण यह है कि उस व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक कौशलों का विकास देर से शुरू होता है और एक स्तर पर जाकर रुक जाता है।

दूसरी ओर, मानसिक बीमारी से ग्रसित व्यक्ति में शारीरिक और मानसिक योग्यताएँ तो सामान्य रूप से विकसित होती है पर किसी उम्र विशेष में जाकर वह व्यक्ति रोगग्रस्त हो जाता है। मानसिक बीमारी के कुछ लक्षण हैं - आश्चर्यजनक व्यवहार करना, तुनक मिजाजी होना, गैर मिलनसारी, आत्महत्या की प्रवृत्ति, दूसरों पर संदेह करना आदि। चिकित्सा सहायता से मानसिक बीमारी का उपचार किया जा सकता है। पर मानसिक मंदन का उपचार नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह बीमारी नहीं है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

5. अनुकूली व्यवहार से जुड़े चार कौशलों की सूची बनाएँ।

....

....

....

....

6. मानसिक विकलांगता वाले व्यक्तियों के तीन लक्षण बताएँ।

....

....

....

....

7. शारीरिक विकलांगता वाले व्यक्तियों के तीन लक्षण बताएँ।

....

....

....

8. निम्नलिखित कथन सत्य हैं या असत्य ? बताएँ।

i) जो व्यक्ति औसत से निम्न स्तर के बौद्धिक काम करता है और व्यवहार में अनुकूलन नहीं कर पाता वह मानसिक रूप से विकलांग व्यक्ति माना जाएगा। (सत्य/असत्य)

ii) गर्भ धारण से लेकर 18 वर्ष की आयु तक का समय विकास का समय होता है। (सत्य/असत्य)

iii) मानसिक विकलांगता और मानसिक बीमारी एक ही बात है। (सत्य/असत्य)

iv) मानसिक विकलांगता का इलाज किया जा सकता है। (सत्य/असत्य)

14.5 विकलांग व्यक्तियों की सामाजिक-संवेगात्मक समस्याएँ

क्या आप बता सकते/सकती हैं कि पिछले अनुच्छेद में बाधित व्यक्तियों की समस्याओं के कौन-कौन से तीन कारक गिनाए गए थे ? ये हैं :

1) विकलांग व्यक्ति के बारे में दूसरों की प्रतिक्रियाएँ।

2) इन प्रतिक्रियाओं को विकलांग व्यक्ति ने किस तरह से लिया।

3) विकलांग व्यक्ति के आकांक्षा-स्तर और उसकी वास्तविक क्षमता के बीच उठने वाले संघर्ष।

विकलांग व्यक्तियों में निम्नलिखित समस्याएँ पाई जाती हैं :

14.5.1 कलंकीकरण और निवर्तन (प्रत्याहार)

किसी भी प्रकार की विकलांगता या अक्षमता के कारण लगे कलंक से विकलांग व्यक्ति समाज द्वारा स्वीकार नहीं किए जाते। लोग उनकी योग्यताओं की बजाय उनकी अयोग्यताओं पर विशेष ध्यान देते हैं। इसके कारण, वे विकलांग व्यक्ति शेष समुदाय से कट जाते हैं और अलग-थलक रहने लगते हैं। कलंक की मात्रा स्थान-स्थान के अनुसार बदलती रहती है। विकसित देशों की तुलना में भारत में विकलांग व्यक्ति पर सामाजिक कलंक अधिक गहरा दिखाई पड़ता है। समाज का यह दृष्टिकोण विकलांग व्यक्तियों की समाज के साथ एकता में बाधक होता है।

देखा गया है कि दृष्टिहीन व्यक्ति की समाज प्रायः उपेक्षा करता है। समाज ही उसकी उपेक्षा नहीं करता, दृष्टिहीनता स्वयं उस विकलांग व्यक्ति की आत्म-धारणा को प्रभावित करती है, भले ही प्रभावित करने वाले कुछ अन्य कारक भी हो सकते हैं तब वे समझने लगते हैं कि वे समाज में रहने लायक नहीं हैं और समाज से अपने को कटा-कटा सा मानने लगते हैं। परिणाम यह होता है कि वे अपने संगी-साथियों से अलग-थलग पड़ जाते हैं और उनमें प्रत्याहार/निवर्तनता वृत्ति जाग उठती हैं। समाज भी उनकी इस भावना को समझ नहीं पाता और वह उनको अपने जैसा स्वीकार करने में आनाकानी करने लगता है। यह भी एक कारक है जिसकी वजह से विकलांग व्यक्ति समाज से अपने को कटा-कटा महसूस करता है और उसमें घुलमिल नहीं

पाता। जैसे, दृष्टिहीन व्यक्ति अपनी दृष्टिहीनता से उतना पीड़ित नहीं होता जितना कि अपने प्रति समाज के नकारात्मक दृष्टिकोण से।

मानसिक विकलांगता वाले व्यक्तियों की प्रत्याहार की समस्या का एक कारण समाज का उनके प्रति दयनीय या बहुधा विरोधी दृष्टिकोण है जो उनकी समस्याओं को और अधिक बढ़ा देता है। यही नहीं, समाज की उपेक्षा से विकलांग व्यक्ति की स्वतंत्रता और उसका अस्तित्व भी खतरे में पड़ जाता है। दूसरी अक्षमताओं की तरफ भी समाज की उपेक्षावृत्ति बरकरार है, इसलिए मानसिक विकलांग व्यक्ति की तरह ही वे भी समाज में अच्छी तरह से घुलमिल नहीं पाते। अतः कुंठा ग्रस्त जीवन व्यतीत करते हैं।

14.5.2 संवेगात्मक समस्याएँ

आपने शारीरिक और दृष्टि बाधा युक्त व्यक्तियों को इधर-उधर आते-जाते अवश्य देखा होगा। सामान्य व्यक्ति की तुलना में वे किन खतरों का सामना करते हैं? उत्तर स्पष्ट है। शारीरिक बाधाओं से असुरक्षा और संवेगात्मक क्षोभ पैदा होता है। उस विकलांग व्यक्ति में इसका प्रभाव तब ओर भी बढ़ जाता है जब उसे घर, विद्यालय और समुदाय - सभी जगह नकारात्मक अनुभवों का सामना करना पड़ता है।

लोगों को जब विकलांग व्यक्तियों के दोष स्पष्ट नजर आते हैं तो उनमें विकलांगों के प्रति तिरस्कार की भावना जाग उठती है। व्यक्ति भी अपनी अक्षमता को छिपाने का प्रयास करता है। इसी कारण वह व्यक्ति प्रायः छड़ी या बैसाखियों के उपयोग से, चश्मा पहनने से और कान में श्रवण-यंत्र के उपयोग से कतराने लगता है, भले ही इनका उपयोग न करने से उसे कार्य-संचालन में बाधा आती हो। अपने बाधाग्रस्त बालकों के दोषों को छिपाने का प्रयास कभी-कभी माता-पिता भी करते हैं। वे अपने बच्चों को दूसरों के प्रतिकूल व्यवहार से दूर रखना चाहते हैं या फिर वे स्वयं अपनी विकृत संतान से शर्मिंदा हैं। इससे बाधाग्रस्त व्यक्ति को और अधिक शर्मिंदगी उठानी पड़ती है। जिससे वह प्रायः संवेगात्मक अभिघात (emotional trauma) के कारण शिकार हो जाता है या कुछ मनःकायिक विकारों (psychosomatic disorder) से पीड़ित रहता है, जैसेः अनिंद्रा, भूख की कमी, धीरे-धीरे जीवन में रुचि का घटना, परिवार व स्वयं के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण, असुरक्षा, चिंता और संवेगात्मक अस्थिरता आदि।

जीवन की माँगों से भयभीत और स्वयं के प्रति दोहरे दृष्टिकोण से भ्रमित, विकलांग व्यक्तियों में चिंताग्रस्त हो जाने की संभावना अधिक रहती है। परिणामस्वरूप वे अपने कार्य-क्षेत्र को सीमित कर देते हैं, अपने आकांक्षा-स्तर को नीचा रखते हैं और असफलता के भय से ग्रस्त रहते हैं। जीवन की माँगों का सामना करने में कमी का एक बहुत बड़ा कारक यही थोपी गई विकलांगता की चिंता है। परिस्थितियों और समस्याओं का सामना करने की घटती जा रही उनकी क्षमता प्रायः आवेगी, बाध्यकारी और कठोर व्यवहार के रूप में प्रकट होती है।

श्रवण-अक्षमता की उपस्थिति मात्र से संवेगात्मक समस्याएँ उत्पन्न नहीं होती। श्रवण-विकृति वाले व्यक्तियों की व्यवहारगत समस्याएँ एक जैसी होती हैं किंतु सुनने वाले व्यक्तियों से अलग होतीं हैं। यदि बहरापन जन्म से है तो इससे पर्याप्त तनाव पैदा हो सकता है तथा व्यक्तित्व विकास बुरी तरह प्रभावित हो सकता है। अपने बच्चों में श्रवण-अक्षमता विद्यमान होने के कारण माता-पिता या तो उनका हर काम करते हैं, जिससे उनकी आत्म-निर्भरता विकसित होने में विलंब होता है या वे बच्चों की उपेक्षा करने लगते हैं जिससे उनमें चिंता की भावना उत्पन्न होती है।

कभी-कभी, माता-पिता के पक्षपातपूर्ण व्यवहार के कारण विकलांग व्यक्तियों में अपने उन भाई-बहनों के प्रति ईर्ष्या की भावना विकसित हो जाती है, जिनके बारे में वे यह सोचते हैं कि माता-पिता उनके साथ हमारी तुलना में अधिक अच्छा बर्ताव करते हैं।

दृष्टि विकलांगता वाले व्यक्तियों में, किसी के द्वारा उनपर नजर रखे जाने के भय से संवेगात्मक तनाव उत्पन्न हो सकता है और यह भय बाद के जीवन में भी काफी हद तक बना रह सकता है।

चूँकि मानसिक विकलांगता वाले व्यक्तियों में समायोजी कौशल कम होते हैं, इसलिए उनमें दैनिक जीवन के तनाव अधिक होते हैं। हल्की मानसिक विकलांगता वाले व्यक्ति प्रायः निम्न आर्थिक सामाजिक पृष्ठभूमि वाले होते हैं, इसलिए उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के व्यक्तियों की तुलना में उन्हें सामाजिक कौशल सीखने और सामाजिक अंतःक्रिया के कम अवसर मिलते हैं। सामान्य लोगों की तुलना में हल्की मानसिक अक्षमता वाले व्यक्तियों में संवेगात्मक संक्षोभ का अधिक प्रभाव पाया जाता है। उन्हें तनावों, कुंठाओं और संघर्षों का अधिक सामना करना पड़ता है, जिससे उनमें व्यवहारगत विकृतियाँ विकसित होने की अधिक संभावना होती है।

बहुविध अक्षमताओं की स्थितियाँ व्यक्ति की सामाजिक-संवेगात्मक समस्याओं को बढ़ा सकती है। विकलांगता की संख्या के बढ़ने के साथ-साथ प्रभावी सामाजिक कार्य करने की क्षमता घटती जाती है। मानसिक अक्षमता के साथ-साथ दृष्टि एवं श्रवण विकलांगता वाले व्यक्तियों पर हुए अनुसंधानों से यह पता चला है कि उनमें कमजोर सामाजिक संबंध और सामान्यतः अपानुकूलक अंतर्वैयक्तिक व्यवहार के उदाहरण यथा क्रोधीपन और समाज विरोधी प्रवृत्तियाँ आदि, अधिक पाए जाते हैं।

14.5.3 अंतर्वैयक्तिक संबंधों और सामाजिक समायोजन संबंधी समस्याएँ

घर में निरंतर हताशा और बहिष्कार का वातावरण गंभीर कुसमायोजन को जन्म देता है। एक विकलांग बालक माता-पिता के बीच कलह की जड़ बन सकता है। उसकी कमियों के लिए दोनों ही बहुधा एक-दूसरे पर दोषारोपण कर सकते हैं। माता पिता के बीच ऐसी फूट तथा भाइयों-बहनों की विकलांग व्यक्ति के प्रति अरूचि से उस व्यक्ति में हीनता की भावना और अधिक तीव्र हो जाती है।

अच्छे वयस्क संबंध, अच्छे प्रथम संबंध (माँ और बच्चे के बीच) पर बहुत निर्भर करते हैं। अंधे शिशु की देखभाल में पारस्परिक आकर्षण विकसित नहीं हो पाता, जिससे बाद में समायोजन की समस्या उत्पन्न हो जाती है। दूसरों द्वारा उपेक्षा और दुर्व्यवहार के कारण विकलांग व्यक्ति में समाज विरोधी लक्षण, जैसे चिड़चिड़ापन, आपा खो देना, आक्रामकता आदि प्रकट हो जाते हैं और वह बदमजाज बन जाता है। विकलांग व्यक्ति को छेड़ने तथा आलोचना करने से उसका स्वाभिमान कम होता है।

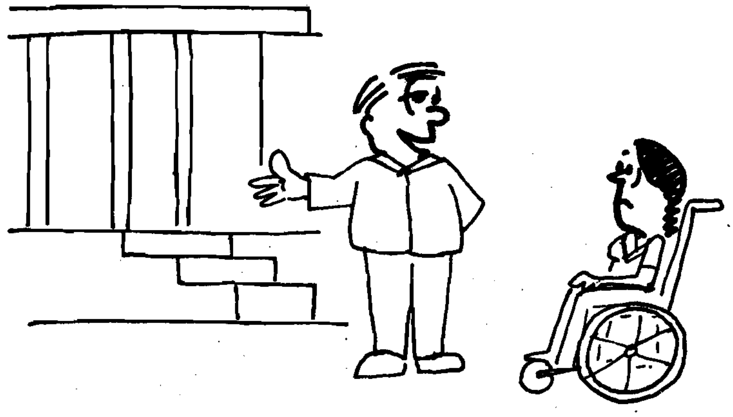

दृष्टि विकलांगता वाले व्यक्तियों को इधर-उधर जाने-आने में ज्यादा समस्या होती है। इसके कारण उनके सामाजिक अंतःक्रिया के अवसर प्रभावित होते हैं। ऐसी स्थिति में गमनागमन के कौशल सीखने के लिए अंधे बच्चों को ऐसे खेलों द्वारा प्रोत्साहित करना चाहिए, जिनमें चढ़ना, संतुलन बनाना, उछलना आदि क्रियाएँ शामिल हैं। ये गतिविधियाँ उनमें आत्मविश्वास और स्व-नियंत्रण को बढ़ाएँगी। ये दोनों गुण स्वस्थ सामाजिक अंतःक्रिया के लिए आधार का काम करते हैं।

मानसिक विकलांगता वाले व्यक्तियों में सही तथा गलत और आंतरिक नियंत्रणों के मूल्य धीरे-धीरे समाहित होते हैं। परिणाम स्वरूप वे बहुधा अनुपयुक्त या समाज विरोधी व्यवहार प्रदर्शित कर सकते हैं।

श्रवण और वाणी संबंधी विकलांगता वाले व्यक्तियों में, यानी बहरे और गूँगे बालकों में कई संप्रेषण समस्याएँ होती हैं, जिनसे सामाजिक अंतःक्रिया की समस्याएँ उत्पन्न होती है।

14.5.4 संप्रेषण समस्याएँ

श्रवण-विकलांगता वाले यानी बहरे व्यक्तियों में संप्रेषण की मुख्य समस्या पाई जाती है, और इस समस्या के बहुत से परिणाम निकलते हैं। इससे समाजीकरण यानी मिलनसारिता और अनुशासन की समस्या उत्पन्न होती है। 'रास्ते चलते फूल तोड़ने में किसी को आपत्ति नहीं होती किंतु पड़ोसी के घर की बगिया से फूल तोड़ना ठीक नहीं माना जाता। यों देखें तो दोनों प्रकार से फूल तोड़ने में कोई अंतर नहीं है किंतु वास्तव में इन दोनों में सूक्ष्म अंतर है और पड़ोसी की बगिया के फूल तोड़ने के परिणाम संगीन हो सकते हैं।

श्रवण विकलांगता वाले व्यक्तियों को यह बात कैसे समझाई जाए? यद्यपि प्रियजनों 'हाँ' और 'नहीं' के संकेतों से तो यह बात समझाई जा सकती है, किंतु 'क्यों नहीं' या किसलिए जैसे प्रश्नों का उत्तर समझाना बहुत कठिन होता है।

श्रवण विकलांगता वाले यानी बहरे विद्यार्थी प्रारंभिक वर्षों में न तो अध्यापक की बात समझ पाते हैं और न ही अपनी बात उन्हें समझा पाते हैं इसलिए उनमें हताशा उत्पन्न हो जाती है और वे झल्लाने लगते हैं।

जब दूसरा व्यक्ति कुछ कह रहा है और उसे हम नहीं समझ पाते तो हम पूछते हैं, 'आपने क्या कहा?'

श्रवण विकलांगता वाले व्यक्ति दूसरे से लज्जित होने के पूर्वानुमान से, यद्यपि वे नहीं सुनते फिर भी, 'क्या' कहने से कतराते हैं।

कभी-कभी हर समय बात करके या दूसरों को बोलने का कम अवसर देकर वे अपने दोष को छिपाने का प्रयास करते हैं। कुछ व्यक्ति बातें करने लगते हैं, दिवास्वप्न देखने लगते हैं, अन्यमनस्कता या अनमनापन, ऊब और उदासीनता प्रकट करते हैं। इससे अन्तर्वैयक्तिक संबंधों में कठिनाइयाँ आती है।

किसी हद तक वे स्वःकेंद्रित हो जाते हैं, क्योंकि उनमें भाषा द्वारा संप्रेषित दूसरे के भावों को समझने की क्षमता नहीं होती। तब स्वयं में आनंद ढूँढ़ने की कोशिश करते हैं और अस्वीकार्य क्रियाकलाप, जैसे स्वयं के शरीर से खेलना, हस्त-मैथुन आदि में लग सकते हैं।

पिछले कुछ, वर्षों में श्रवण-विकलांगता वाले व्यक्तियों के लिए अवसर बढ़ाने में सकारात्मक विकास हुआ है। अब ऐसे कम्प्यूटर और विशेष रूप से निर्मित सुवाह्य आसानी से ले जा सकने योग्य उपकरण उपलब्ध हैं जिनसे प्रभावी व्यक्तिगत संबंध स्थापित करना सरल हो गया है।

श्रवण अक्षम व्यक्ति में 'उच्चारण' दोष पाया जाना स्वाभाविक है। बच्चों की वाणी संबंधी समस्याएँ न केवल उनके सामाजिक संबंधों में बाधक होती हैं बल्कि उन्हें उनकी आवश्यकताओं को प्रभावी तरीके से बताने में भी विशेष कठिनाई आ सकती है। दूसरे व्यक्ति तो अपनी असुविधा को, अपने असंतोष को भाषा द्वारा प्रकट कर सकते हैं और जिस बात को वे ठीक से नहीं समझ पाते, उसके बारे में प्रश्न पूछ सकते हैं। ऐसे सामान्य व्यक्तियों की तुलना में वाग्दोष से पीड़ित व्यक्ति सामाजिक कौशल अर्जित करने में और उनके सामाजिक वातावरण में कार्य करने में प्रायः कम लचीले होते हैं।

14.5.5 नकारात्मक स्व-अवधारणा

एक व्यक्ति का उन सभी पक्षों के बारे में जिनकी उसे जानकारी है, अपनी योग्यता और सीमाओं का मूल्यांकन 'स्व-अवधारणा' को दर्शाता है। 'जीवन जीने योग्य है' इस बात का अनुभव करने के लिए व्यक्ति को स्वयं के बारे में सकारात्मक अवधारणा रखनी चाहिए।

आपकी 'स्व-अवधारणा' के निर्माण के लिए कौन उत्तरदायी है? स्वभावतः हम दूसरों की भावनाओं और अभिवृत्तियों पर निर्भर करते हैं। वे अन्य व्यक्ति हैं, हमारे बाल सखा, अध्यापक, पड़ोसी और विशेष रूप से माता-पिता। अपनी स्व-अवधारणा के निर्माण में इन लोगों का सर्वाधिक योगदान रहता है।

विकलांग व्यक्तियों को अपने नकारात्मक मूल्यांकन के संकेत प्राप्त होते रहते हैं। यह बताया गया है कि बाधाग्रस्त व्यक्ति प्रायः अनुभव करते हैं कि उनके हालात दूसरों को उनके सकारात्मक गुणों को पहचानने से रोकते हैं।

यह स्वाभाविक है कि किसी भी, विकलांग व्यक्ति में अपनी विकलांगता के कारण अपने बारे में अपर्याप्तता की भावना होती है। यदि अध्यापक व माता-पिता केवल उसकी विकलांगता पर ही ध्यान देते हैं और ऐसी टिप्पणी करते हैं, जैसे, "तुम इसे नहीं कर सकते" या "अमुक काम करना तुम्हारे वश का नहीं है", आदि, तो इससे व्यक्ति में आत्मविश्वास कम होगा और अपने बारे में उसकी नकारात्मक स्व-अवधारणा ही पुष्ट होगी।

14.5.6 व्यवहारगत समस्याएँ

समाज और परिवार कें दोषपूर्ण दृष्टिकोण से जैसे अस्वीकृति, अतिरक्षण और अति अपेक्षा के कारण अक्षम व्यक्तियों में कई संवेगात्मक और व्यवहारगत समस्याएँ, जैसे आक्रमकता, सिर पीटना, झल्लाहट आदि विकसित हो जाती हैं। शारीरिक अक्षमता या दृष्टि-विकलांगता वाले लोगों की तुलना में मानसिक विकलांगता वाले व्यक्ति प्रतिक्रिया स्वरूप अधिक उग्र हो जाते हैं।

माता-पिता / अभिभावकों और अध्यापकों को चाहिए कि वे विकलांग व्यक्तियों को स्वीकार करने व समाज से कटकर अलग-थलग न पड़ जाने के लिए अनुकूल दृष्टिकोण का निर्माण करने का प्रयास करें। समाज के उपयुक्त दृष्टिकोण के बिना माता-पिता के लिए, विकलांग बालकों का पालन-पोषण करना संभव नहीं होगा और न ही वयस्क विकलांग व्यक्ति स्वतंत्रतापूर्वक जीवन का आनंद उठा सकेंगे, यहाँ तक कि वे अपनी वास्तविक क्षमताओं के अनुरूप कार्य भी नहीं कर पाएँगे।

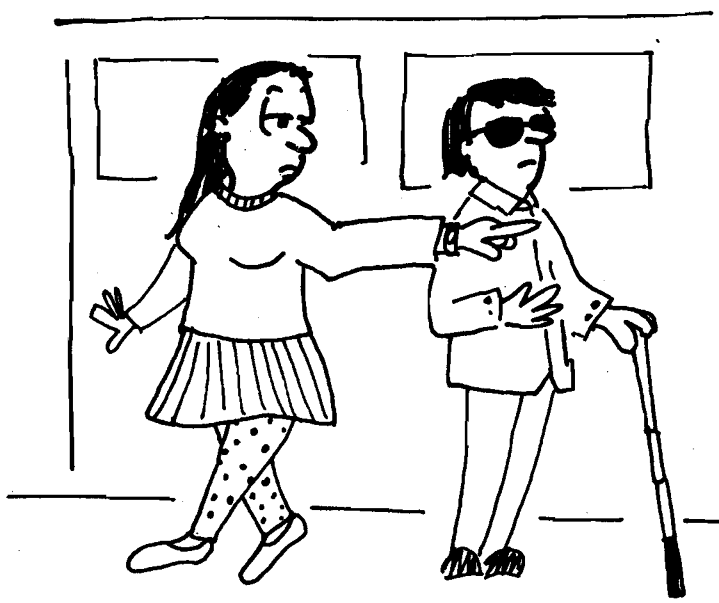

अतिरक्षण का दूसरा नुकसानकारी प्रभाव यह है कि माता-पिता विकलांग बालक की एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में वृद्धि नहीं होने देते। जो वयस्क अपने बचपन में आवश्यकता से अधिक सुरक्षा की छाँह में पले हों, वे प्रायः अपरिपक्व, एवं असुरक्षित महसूस करते है और स्वयं निर्णय नहीं ले पाते और सदा दूसरों पर निर्भर रहते हैं।

माता-पिता की अति अपेक्षाएँ भी बालक के आत्मविश्वास में कमी और असुरक्षा लाती है। उस बालक में कई अन्य योग्यताएँ हो सकती हैं किंतु अभिभावकों के निरंतर आलोचनापूर्ण व्यवहार से और बार-बार टोकाटाकी करते रहने से उसमें गंभीर हीनता की भावना घर कर जाएगी।

यदि विकलांग व्यक्तियों को उचित प्रोत्साहन, आरंभ से ही उद्दीपन और निर्देशन प्राप्त होता रहे तो अधिकतर विकलांग समाजोपयोगी और स्वतंत्र जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

14.5.7 रोजगार संबंधी समस्याएँ

क्या विकलांगता वाले व्यक्तियों को नौकरी दी जा सकती है? शारीरिक विकलांगता वाले व्यक्तियों और दूसरे पुरानी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं वाले व्यक्तियों को उनकी योग्यताओं के अनुसार व्यवसाय में या काम पर लगाया जा सकता है। यदि उनकी सुरक्षा के उचित उपाय किए जाएँ और उनकी विकलांगता से उत्पन्न संभावित खतरों से बचाया जाए, तो वे उत्पादकता बढ़ाने में अपना पूर्ण योगदान दे पाएँगे।

रोज़गार देने के मामले में विकलांग व्यक्तियों के साथ भेदभाव बरता जाता है। "हम स्वभावतः शारीरिक रूप से पीड़ित को नियुक्ति नहीं देते, जब कि हमें पूर्णतः स्वस्थ व्यक्ति उपलब्ध हैं।" नियोक्ताओं के ऐसे विचार विकलांग व्यक्तियों को कार्य के उपयुक्त होने के बावजूद ग्लानि और निराशा के सागर में गोते लगाते छोड़ देते हैं और उनके मन-मस्तिष्क में असंतोष व्याप्त हो जाता है।

'विकलांग व्यक्ति कार्य करने के लिए उपयुक्त सिद्ध नहीं होंगे' - यह दृष्टिकोण रोजगार बाजारों में बाधाग्रस्त व्यक्तियों के प्रवेश को रोकता है। इससे उनमें कई प्रकार की संवेगात्मक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

9. सामान्य व्यक्तियों की नकारात्मक टीका-टिप्पणियों के प्रति विकलांग व्यक्तियों की क्या प्रतिक्रिया होती है?

....

....

....

....

10. विकलांग व्यक्तियों में सामाजिक कुसमायोजन के कौन-कौन से मुख्य कारण हैं?

....

....

....

....

11. 'स्व-अवधारणा' को परिभाषित करें।

....

....

....

....

12. स्व-अवधारणा के निर्माण में मुख्य रूप से कौन लोग उत्तरदायी हैं?

....

....

....

....

13. शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्ति के लिए अंतःक्षेप के दो मुख्य लक्ष्यों का उल्लेख करें।

....

....

....

....

14. माता-पिता की ओर से अतिरक्षण प्राप्त विकलांग / अक्षम व्यक्ति पर क्या-क्या प्रभाव पड़ेंगे?

....

....

....

....

15. बताएँ कि निम्नलिखित कथन सत्य हैं या असत्य?

अ) शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों के लिए अंतःक्षेपात्मक कार्यक्रमों से प्रौद्योगिक विकास का कोई लेना-देना नहीं है। (सत्य/असत्य)

ब) विकलांग व्यक्ति की शिक्षा प्रक्रिया में परिवार एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। (सत्य/असत्य)

14.6 माता-पिता, अभिभावकों और अध्यापकों की भूमिका

1) विकलांग बालकों को निराश या परास्त हुए बिना अपनी सीमाओं को स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

2) माता-पिता / अभिभावकों और अध्यापकों को चाहिए कि वे विकलांग बालकों को खेल, वार्ता और स्वतंत्र कल्पना के लिए प्रोत्साहित करते रहें। खेल समाजीकरण के सर्वाधिक शक्तिशाली साधनों में से एक है।

3) बाधित / विकलांग व्यक्तियों के प्रति विचारशील और पूर्वाग्रहरहित दृष्टिकोण, उनकी आत्म-निर्भरता और आत्म-सिद्धि में सहायता करेगा।

4) माता-पिता / अभिभावकों और अध्यापकों को चाहिए कि वे बाधितों के वातावरण को सुगम बनाने का प्रयास करें। ढलान वाली सीढ़ियाँ, पहिए वाली कुर्सी के लिए पर्याप्त चौड़े दरवाज़े, भोजनालयों और अल्पाहार गृहों में ब्रेल लिपि में व्यंजन-सूचियों की कुछ प्रतियाँ, चमकीली बत्तियाँ और अलार्म, सीढ़ियों के पर्याप्त नीचे बटन इत्यादि उनके लिए कुछ विशेष सुविधाएँ हो सकती हैं।

5) विकलांग/ बाधित व्यक्तियों में भी पूर्णतः आत्मनिर्भर व्यक्ति के रूप में विकास करने की संभावनाएँ होती हैं। अतः माता-पिता/अभिभावकों और अध्यापकों को चाहिए कि वे विकलांग बालकों के लिए ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करें ताकि ऐसे बालक भी सृजनशील बन सकें।

6) माता-पिता को बालक की विकलांगता को स्वीकार करना चाहिए। माता-पिता में जाने या अनजाने बाधित बच्चों को स्वीकार न करने या उन्हें दंडित करने की प्रवृत्ति पाई जाती है या फिर वे उनके प्रति अधिक सहानुभूति प्रदर्शित करने लगते हैं। बालक के समग्र व्यक्तित्व के विकास पर अस्वीकरण और अतिरक्षण दोनों का ही नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

7) माता-पिता और अध्यापक दोनों में ही अपने बाधाग्रस्त बच्चों/ छात्रों की क्षमताओ का विस्तृत सामान्यीकरण करने की प्रवृत्ति पाई जाती है, जो अवांछनीय और अवास्तविक है। उसकी और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच की विसंगति, बाधित व्यक्ति में तनाव बढ़ाने और परेशानी पैदा करने में योगदान करती है। परिणामस्वरूप उसका व्यवहार कुछ बदल जाता है।

8) माता-पिता और अध्यापकों को चाहिए कि वे जहाँ तक संभव हो विकलांग बालकों को सामान्य जीवन उपलब्ध कराने की कोशिश करें।

9) विकलांग बालकों की संवेगात्मक/ भावात्मक समस्याओं के समाधान के लिए दंड और बल का प्रयोग नहीं करना चाहिए। उन्हें यौन रुचियों की स्वस्थ और रचनात्मक अभिव्यक्ति करने देनी चाहिए। उनके शारीरिक विकास के लिए जो-जो बातें सहायक हों, उन सबकी उचित जानकारी उन्हें मिल सके, ऐसा प्रयत्न करना चाहिए।

10) उनमें मिलनसारिता की भावना विकसित करने के लिए सामाजिक कार्यकलापों का आयोजन किया जाना चाहिए।

11) माता-पिता के बीच भावात्मक संबंध और उनका अपने बच्चे के साथ और परिवार के अन्य सदस्यों के साथ व्यवहार विकलांग बच्चे के सामाजिक व्यवहार का आदर्श बनता हैं। झगड़ालू और विरोधी स्वभाव वाले माता-पिता का व्यवहार देखकर विकलांग बच्चों में भी आक्रामकता और विरोधी व्यवहार पनप जाता है। संवेगात्मक रूप से अस्थिर माता-पिता बच्चों के लिए 'कमजोर आधार' प्रदान करते हैं जिससे उनमें कमजोर समायोजन विकसित हो जाता है।

12) विकलांग बालकों को संवेगात्मक रूप से संतुलित और स्थायी पारिवारिक परिवेश प्रदान करने की आवश्यकता है। इससे बालक के स्वस्थ्य सामाजिक और संवेगात्मक विकास की नींव पक्की हो जाती है।

13) जहाँ तक विकलांग बालकों की सामाजिक आवश्यकताओं का संबंध है, या तो उन्हें समझा नहीं जाता या फिर उन्हें गलत समझा जाता है। अध्यापक और माता-पिता दोनों को ही बधित बालकों के सामाजिक विकास की विभिन्न अवस्थाओं की विशेषताओं और आवश्यकताओं का ज्ञान होना चाहिए ताकि वे अधिक प्रभावी अन्तःक्षेप कर उनकी सहायता कर सकें।

14.7 निर्देशन उपबोधक की भूमिका

उपबोधक को न केवल विकलांग व्यक्ति के प्रति बल्कि उसके माता पिता और परिवार के दूसरे सदस्यों के प्रति भी सलाहकार की भूमिका अदा करनी होती है। विकलांग बालक के साथ काम करने वाले उपबोधक को महसूस करना चाहिए कि उपबोधन देने का बुनियादी उद्देश्य विकलांग बालक को उसकी संभावित क्षमताओं की पहचान करने में सहायता करना है। उपबोधक को चाहिए कि वह विकलांग बालक के मन में अपनी योग्यताओं के प्रति विश्वास विकसित कर सके और जहाँ तक संभव हो उसके स्वावलंबी बनने में उनकी सहायता करे।

विकलांग व्यक्ति भी उतना ही चुस्त और भावात्मक जीवन जीने वाला होता है जितना कोई दूसरा व्यक्ति। अतः उपबोधक को चाहिए कि वह विकलांग व्यक्ति को यह महसूस करा दे कि वह उपबोधक की सलाह पर विश्वास रख सकता है। उपबोधक को यह स्मरण रखना होगा कि विकलांग बालक को सलाह देते समय उसका विश्वास अर्जित करना उसके लिए परम आवश्यक है, अन्यथा उसके परामर्श-प्रयास सफल नहीं होंगे। विकलांग व्यक्तियों के साथ कार्य करने वाले उपबोधकों को ध्यान में रखना चाहिए कि विकलांग बालकों को सफलता और सफल अनुभवों की आवश्यकता है, जो उन्हें दिए जाने चाहिए।

उपबोधक को विकलांग बालकों के माता-पिता के साथ भी कार्य करने की आवश्यकता है ताकि वे भी अपने विकलांग बालक की आवश्यकताओं को जान सकें और उसे यथास्थिति स्वीकार करते हुए उसके विकास में अधिकतम संभावित सहायता कर सकें।

माता-पिता के विचारों को ध्यान में रखते हुए उपबोधक को चाहिए कि वह विकलांग बालक की उन समस्याओं पर उनसे सीधी चर्चा करे जो माता-पिता को भी अत्यधिक महत्वपूर्ण दिखाई देती है।

उपबोधन निम्न बिंदुओं पर केंद्रित होना चाहिए

- विकलांग बालक की वास्तविक समस्याओं को समझने में उनकी सहायता करना और उसके प्रति भेदभाव न बरतना।
- विकलांग बालक के अपेक्षाकृत जल्दी बढ़ने वाले व्यवहार को समझने में माता-पिता की सहायता करना और किस व्यवहार को विकसित होने देना चाहिए और किसको नहीं - इसके बारे में उन्हें सलाह देना।
- विकलांग बच्चों के परिवारों की सामान्य व विभिन्न समस्याओं को हल करना सीखने में सहायता करना।
- विकलांग बच्चों के पालन-पोषण व प्रबंधन में निर्देशन प्रदान कर सकने वाली सहायक पुस्तकों और पुस्तिकाओं के बारे में राय देना, और इस सामग्री को उनके अध्ययन के लिए उपलब्ध कराना।
- उनके बच्चे में और अधिक सफलतापूर्वक और अधिक स्वीकृति पूर्ण व्यवहार करने की समझ और ज्ञान विकसित करना।
- अवकाश की अवधि में विकलांग बालकों को अन्य रचनात्मक कार्यों में व्यस्त रखने के बारे में अभिभावकों की जानकारी बढ़ाना।
- उपलब्ध सामुदायिक संसाधन, जैसे निदान-केंद्र, आश्रयी कार्यशालाओं, शैक्षिक संस्थाओं आदि के बारे में विकलांग बालकों के अभिभावकों को सलाह देना।

माता-पिता को जब अपने बाधित बालक के विकलांग होने की जानकारी सबसे पहले मिलती है तो उनके मन में, भावनाओं की क्रिया-प्रतिक्रिया की बाढ़ सी आ जाती है। तो उन्हें आघात का अनुभव होता है तब वे अविश्वास, अस्वीकृति, क्रोध, अपराध, हताशा, अवसाद, पहचान और

अनुकूलन आदि की तरंगों में डूबने-उतरने लगते हैं। ऐसे निश्चय-अनिश्चय के माहौल में उपबोधक को चाहिए कि वह इन परेशानियों से पार कराने में माता-पिता की सहायता करें।

ऐसी अवस्था में बालक और माता-पिता दोनों के लिए क्या करणीय है और क्या नहीं - उपबोधक को चाहिए कि वह दोनों वर्गों को इसका प्रशिक्षण और उपबोधन दे। निदानात्मक मूल्यांकन करा लेने के बाद इस बात का पता चल जाएगा कि बालक क्या करने के योग्य है और क्या करने के नहीं। तदनुसार कार्यों पर बल दिया जाए। तब परिवार के सदस्यों को परामर्श देना होगा कि किस तरह से विकलांगता के कलंक को धोने में वे अपनी और बालक की सहायता कर सकते हैं।

उपबोधक को इस तथ्य के बारे में सचेत रहना होगा कि विकलांग व्यक्तियों में अपने भविष्य से संबंधित आवश्यकताओं के बारे में सूझ सीमित मात्रा में ही होती है। अतः विकलांग बालकों के भविष्य की योजना बनाने में माता-पिता को उपबोधक के सहयोग की आवश्यकता होगी।

14.8 सारांश

समस्याएँ तभी प्रारंभ होती हैं जब कोई विकलांग व्यक्ति अपनी अक्षमता को अनुपयुक्तता की दशा के रूप में स्वीकार करता है। विकलांग व्यक्तियों की समस्याएँ, मुख्य रूप से शारीरिक और दृष्टि संबंधी समस्याएँ तभी उग्र रूप धारण करती हैं जब वह उन्हें अपने जीवन के लिए असहायपन की स्थिति का परिचायक मानने लगता है और उसकी धारणाओं की समाज की ओर से भी परिपुष्टि होने लगता है। वास्तव में किसी व्यक्ति की अंगहीनता उस व्यक्ति की क्षमताओं को विकसित करने में बाधक नहीं होता।

व्यक्ति और समाज को किसी अंग की विकलता को व्यक्तियों की व्यक्तिगत कमियों में से ही एक कमी के रूप में देखना चाहिए। इस हीनता को उचित परिप्रेक्ष्य में स्वीकार करना चाहिए। विकलांग व्यक्तियों की भी वे ही सामाजिक और भावात्मक आवश्यकताएँ होती हैं जो सामान्य व्यक्तियों की होती है।

विकलांग व्यक्तियों की भी बुनियादी आवश्यकता उनकी ऐसी जीवनेच्छा के रूप में प्रकट होती है कि वे दूसरों को प्यार करें तो दूसरे भी उन्हें प्रेम की दृष्टि से देखें। वे दूसरों की ही तरह सभी भावों का, जैसे खुशी, उदासी, क्रोध और घृणा का अनुभव करते हैं। मूल आवश्यकताओं की पूर्ति के बिना कोई व्यक्ति, चाहे वह स्वस्थ शरीर हो या कि विकलांग, अपने जीवन को जीने-योग्य या सार्थक नहीं मानेगा।

विकलांग व्यक्तियों को अपनी अक्षमताओं और उन अक्षमताओं के बारे में परिवार और समाज की गलत-सलत प्रतिक्रियाएँ देख-सुन कर, कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

14.9 अभ्यास कार्य

1. 12 से 16 वर्ष के बीच की उम्र वाले एक विकलांग विद्यार्थी का चयन करें। एक सप्ताह तक उसके क्रियाकलाप और व्यवहार का अवलोकन करें। फिर जिस अपर्यापता या अनुपयुक्तता के बारे में वह अटपटापन महसूस करता हो, उससे संबंधित विभिन्न मुद्दों पर उसके साथ चर्चा करें। अंत में लगभग 1000 शब्दों में (3 पृष्ठ का) रिपोर्ट तैयार करें।

2. किसी माध्यमिक विद्यालय के एक विकलांग विद्यार्थी के माता-पिता और अध्यापकों का साक्षात्कार लें। फिर 100 शब्दों में एक रिपोर्ट लिखें। इस रिपोर्ट में विद्यार्थियों के उचित विकास के मार्ग में आने वाली विभिन्न समस्याओं का वर्णन करें।